

प्रतिलिपि आदेश दिनांक 19-11-15 पारित द्वारा सदस्य, राजस्व मंडल,  
मध्यप्रदेश, ग्वालियर प्रकरण क्रमांक निग0 3750-एक/15 विरुद्ध आदेश  
दिनांक 03-11-2015 पारित द्वारा तहसीलदार, गोहलपुर जिला जबलपुर  
प्रयकरण क्रमांक 01/बी-121/2015-16.

श्रीमती सुनीता यादव  
पत्नि योगेश यादव पुत्री स्व. गोविंद यादव  
निवासी करमेता, जिला जबलपुर  
द्वारा मुख्यार श्री जिया उल हक्क पिता आई हक्क  
निवासी आधारताल, जबलपुर

----- आवेदक

विरुद्ध

म0प्र0 शासन द्वारा

f.a कलेक्टर, जिला जबलपुर

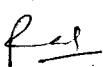
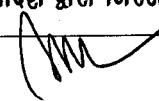
----- अनावेदक

XXXIX(a)BR(H)-11

## राजस्व मण्डल, मध्यप्रदेश, व्यालियर

प्रकरण क्रमांक निग0 3750-एक/15

जिला - जबलपुर

| स्थान तथा<br>दिनांक | कार्यवाही तथा आदेश  | पक्षकारों एवं अभिभावकों<br>आदि के हस्ताक्षर   |
|---------------------|---|---|
| १९-११-१५            | <p>प्रकरण का अवलोकन किया। यह निगरानी तहसीलदार, गोहलपुर जिला जबलपुर के प्रकरण क्रमांक ०१/बी-१२१/२०१५-१६ में पारित आदेश दिनांक ३-११-१५ के विरुद्ध म०प्र०० भू-राजस्व संहिता, १९५९ ( जिसे आगे संहिता कहा जायेगा ) की धारा ५० के तहत प्रस्तुत की गई है।</p> <p>2/ उभयपक्षों के तर्कों पर विचार किया एवं तहसीलदार के आलोच्य आदेश, राजस्व मण्डल द्वारा पारित आदेश दिनांक ०१-५-२००१ एवं प्रस्तुत अब्य दस्तावेजों का अवलोकन किया। इस प्रकरण में मुख्य वैधानिक बिंदु यह है कि क्या तहसीलदार द्वारा अपने पूर्व के आदेश दिनांक २६-९-१५ के आदेश को निरस्त करने हेतु संहिता की धारा ३२ का उपयोग करना विधिसंगत है या नहीं ? संहिता की धारा ३२ के प्रावधानों का उपयोग तभी किया जा सकता है जब कोई अब्य प्रावधान न हों। चूंकि संहिता की धारा ५१ में पुनरावलोकन के स्पष्ट प्रावधान हैं ऐसी स्थिति में तहसीलदार द्वारा संहिता की धारा ३२ का उपयोग करते हुए अपने पूर्व के आदेश को निरस्त करना व्यायिक एवं विधिसम्मत नहीं है। इस संबंध में व्यायदृष्टांत १९८८ आर०एन० २३२ एवं २७९ अवलोकनीय हैं। व्यायदृष्टांत १९८८ आर०एन० २३२ में यह सिफारिश प्रतिपादित किया गया है कि नामांतरण का पूर्ववत आदेश -धारा ३२ के अधीन पुनः प्रारंभ या पुनरीक्षित नहीं किया जा सकता - उचित उपचार अपील अथवा पुनरावलोकन है। इसी प्रकार व्यायदृष्टांत १९८८ आर०एन० २७९ में यह अभिनिर्धारित किया गया है कि पूर्व का नामांतरण ओश - अपील या पुनरावलोकन के उपचार का उपयोग नहीं किया गया - ऐसा आदेश अंतिर्हित शक्तियों के अधीन अपास्त नहीं किया जा सकता। अतः इस प्रकरण में तहसीलदार द्वारा पूर्व में दिनांक २६-९-१५ को पारित आदेश को संहिता की धारा ३२ का उपयोग करते हुए आवेदिका को बिना सुने आलोच्य आदेश द्वारा निरस्त करना किसी भी दृष्टि से उचित</p> |   |

सुनीता यादव विलङ्घ तहसीलदार, गोहलपुर

| स्थान तथा<br>दिनांक | कार्यवाही तथा आदेश  | पक्षकारों एवं अधिभाषकों<br>आदि के हस्ताक्षर |
|---------------------|---|---|
|                     | <p>नहीं छहराया जा सकता। दर्शित परिस्थिति में तहसीलदार का आलोच्य आदेश दिनांक 3-11-15 हस्ती स्तर पर निरस्त किया जाता है। यह स्पष्ट किया जाता है कि तहसीलदार यदि यह मानते हैं कि उनके द्वारा दिनांक 26-9-15 को पारित आदेश में कोई श्रृंगार हुई है तो वे संहिता के प्रावधानों के अनुसार वरिष्ठ अधिकारी/न्यायालय की अनुमति प्राप्त कर संबंधित पक्षों को सुनवाई का समुचित अवसर देकर विधिवत् कार्यवाही करने हेतु स्वतंत्र हैं। उक्त निर्देश के साथ यह निगरानी नियाकृत की जाती है।</p> <p style="text-align: right;"><br/>सदस्य</p> |   |